Sanskrit (Honours)
D.A. (Ist Part)

डॉ. [illegible]
अतिथि शिक्षक
आर. सी. एस. कॉलेज, [illegible]
[illegible]

काव्यदीपिका
प्रथमशिखा

आचार्य कान्तिचन्द्र भट्टाचार्य मंगलाचरण करके सीधे काव्यप्रयोजन में प्रवेश करते हैं। काव्यप्रयोजन का लक्षण करते हुए वे कहते हैं-

काव्यं यशसेऽर्थकृते
व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये
सद्यः परनिर्वृतये
कान्तासम्मितयोपदेशयुजे

अर्थात् काव्यं लोकोत्तरवर्णनात्मकं वाङ्मयं यशसे कीर्तिलाभाय, अर्थकृते धनलाभाय व्यवहारविदे लोकसमुदाचारपरिज्ञानाय, शिवेतरक्षतये, शिवः कल्याणं तदितरकल्याणं दुरितमङ्गलं वा तस्य क्षतये निराकरणाय सद्यः परनिर्वृतये, काव्यश्रवणपठनसमनन्तरमेव परमानन्दावाप्तये कान्तासम्मितयोपदेशयुजे, कान्ता प्रिया तया सम्मितं तुल्यं रमणीयं यदुपदेशं कार्याकार्येषु प्रवृत्तिनिवृत्त्यात्मकमभिप्रेरणं तद्योजनाय अर्थात्

Sanskrit (Honours)
D.A. (Ist Part)

डॉ. [illegible]
अतिथि शिक्षक
आर.सी.एस. कॉलेज, मंगलैंड
बेगूसराय

काव्यदीपिका
प्रथमशिखा

आचार्य कात्रिचन्द्र भट्टाचार्य मंगलाचरण करके सीधे काव्यप्रयोजन में प्रवेश करते हैं- काव्यप्रयोजन का लक्षण करते हुए वे कहते हैं-

काव्यं यशसेऽर्थकृते
व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये
सद्यः परनिर्वृत्तये
कान्तासम्मितयोपदेशयुजे

अर्थात् काव्यं- लोकोत्तरवर्णनात्मकं वाङ्मयं. यशसे- कीर्तिलाभाय, अर्थकृते- धनलाभाय व्यवहारविदे- लोकसमुदाचारपरिज्ञानाय. शिवेतरक्षतये- शिवः कल्याणं तदितरकल्याणं दुरितमङ्गलं वा तस्य क्षतये- निराकरणाय सद्यः परनिर्वृत्तये. काव्यश्रवणपठनसमनन्तरमेव परमानन्दावाप्तये कान्तासम्मितयोपदेशयुजे. कान्ता प्रिया तया सम्मितं तुल्यं रमणीयं यदुपदेशं कार्याकार्येषु प्रवृत्तिनिवृत्त्यात्मकमभिप्रेरणं तद्युजनाय अर्थात्

प्रिया प्रयुक्त वाक्यवद् रमणीयतया कर्तव्यावर्तविनिर्देशाय भवतीति सर्वत्र योज्यम्। अत्र आर्या वृत्तम्।

यह कारिका मूलरूप में आचार्य मम्मट द्वारा काव्यप्रकाश में उद्धृत की गई है।

इस कारिका के अनुसार काव्य की रचना और अध्ययन कीर्तिलाभ के लिए, धन की प्राप्ति के लिए, लोकव्यवहार की जानकारी के लिए, किसी अनिष्ट या अमंगल के निराकरण के लिए तथा पढ़ने-सुनने के साथ ही परम आनन्दानुभूति के लिए एवं अपनी प्रिया की मीठी वचनों से युक्त मधुर उपदेश के संयोजन हेतु प्रयुक्त किए जाते हैं।

Rukam Ram Ma

— कुमार